IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

''रामचरितमानस में वर्णित सामाजिक मूल्यों का अभिप्राय''

***Kalpana Jangid, ** Dr. Satpal Swami**

*Rsearch Scholar, Department of Education, (Geeta Co-Educational T.T. College, Gharshana, Shri Ganganagar- 335711) MGSU Bikaner, 334004, Rajasthan, India

******Research Guide, Department of Education, (Geeta Co-Educational T.T. College, Gharshana, Shri Ganganagar- 335711) MGSU Bikaner,334004, Rajasthan, India

ABSTRACT

गोस्वामी तुलसीदास, जिन्हें 'कवि कुलगुरु' के नाम से भी जाना जाता है, भारतीय साहित्य और संस्कृति के प्रमुख स्तंभों में से एक हैं। तुलसीदास का जन्म विक्रम संवत 1554 (1532 ईस्वी) में हुआ माना जाता है। उनका जन्म श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की सप्तमी तिथि को हुआ था, जन्म स्थान के विषय में विद्वानों में मतैक्य नहीं है परन्तु उनका जन्म उत्तर प्रदेश के सोरों शूकरक्षेत्र (वर्तमान कासगंज) या चित्रकूट के निकट राजापुर नामक स्थान में हुआ माना जाता है। हालाँकि, राजापुर को तुलसीदास का प्रमुख जन्मस्थान माना जाता है।

बाबा तुलसी दास की कृतियों ने न केवल हिंदी साहित्य को समृद्ध किया बल्कि सामाजिक जागरण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। तुलसीदास के समय में समाज अनेक प्रकार की बुराइयों, सामाजिक विषमताओं और धार्मिक कट्टरता से ग्रसित था। इन समस्याओं से उबरने और समाज में नई ऊर्जा का संचार करने के लिए तुलसीदास ने अपनी कृतियों के माध्यम से एक अद्वितीय योगदान दिया।

तुलसीदास भक्तिकालीन राम–भक्ति शाखा के शीर्षस्थ कवि हैं। तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' के माध्यम से एक सम्पूर्ण आदर्श समाज का खाका तैयार किया है जिसकी बुनियाद सामंती जीवन मूल्य है. उन्होंने क्षीण होती वर्ण–व्यवस्था एवं सामाजिक मूल्यों को स्थापित करने का प्रयास किया है। रामकथा के माध्यम से घटनाओं के आलोक में पारिवारिक, सामाजिक आदर्शों को उन्होंने व्याख्यायित करने की कोशिश की है। तुलसी की रचना के मूल में लोक–मंगल है, जिसे वे काव्य का उद्देश्य मानते हैं। इसी आलोक में उनकी सामाजिक चेतना की निर्मिति भी होती है। तुलसीदास कहते हैं

'मंगल करनि कलिमल हरनि तुलसी कथा रघुनाथ की'

अर्थात् रामकथा कल्याण करने वाली और कलियुग के पापों को हरने वाली है। तुलसी की काव्य–रचना के मूल में लोक–मंगल है। यह लोक–मंगल परिवार और समाज के नैतिक मूल्यों पर आधारित है। इसलिए तुलसीदास ने अपनी राम–कथा में आदर्श जीवन–मूल्यों को केन्द्र में रखा है। उन्होंने जीवन के तमाम पक्षों का एक व्यवहारिक रूप रामकथा के माध्यम से प्रस्तुत किया है। यहाँ पारिवारिक और सामाजिक स्थितियाँ अपने आदर्श रूप में हैं। वे एक ऐसे समाज की कल्पना करते हैं, जहाँ दैहिक, दैविक, एवं भौतिक किसी भी प्रकार के कष्टों का लेश–मात्र न हो; जहाँ ह्रासोन्मुख

वर्णाश्रम अपने आदर्श रूप में स्थापित किया जा सके; और अन्ततः समाज राम–राज्य के रूप में परिणत हो सके। तुलसीदास की यह कल्पना उनकी सामाजिक चेतना का ही विस्तार है।

गोस्वामी तुलसीदास ने अपनी रचनाओं में अपने समय की परिस्थितियों का यथातथ्य वर्णन किया है। उस समय समाज की जो व्यवस्था थी उसका निरूपण तुलसी ने अपने काव्य में किया है। 'रामचरितमानस' ग्रन्थ में तुलसीदास ने सामाजिक ताने–बाने को पूर्ण रूप में व्यक्त किया है।

कूटशब्दः रामचरितमानस, गोस्वामी तुलसीदास, सामाजिक मूल्य।

प्रस्तावना :

भारतीय लोक जीवन में बहुत प्राचीन काल से ही सम्मान पाती चली आयी 'राम की पावन कथा' को लेकर गोस्वामी तुलसीदास ने दृ **'न भूतो न भविष्यत'** दृ के कथन को चरितार्थ करने वाले अपने महान् काव्यग्रन्थ रामचरित मानस की रचना की। नानापुराण निगमागम में बिखरी भारतीय संस्कृति और रीति–नीति इस एक ही काव्य–ग्रन्थ में आ विराजती है। रामकथा को आधार बनाकर भारतीय परम्परा में जितनी भी रचनाएँ हुई हैं, तुलसीदास का 'रामचरितमानस' उन सब में **'नवल विधु'** सिद्ध हुआ है। इस महान् ग्रन्थ में तत्कालीन धर्म, राजनीति, सामाजिक आदर्श सभी कुछ साकार हो उठा है। उस युग की छोटी दृ से छोटी भावना भी इस काव्य में स्थान पाती है। संक्षेप में, रामचरित मानस भक्ति और धर्म का प्रतिपादक महान् ग्रन्थ होने के साथ ही एक उच्चकोटि का महाकाव्य भी है।

धर्म और नैतिकता का प्रचार :

"धर्म हेतु अवतरेउँ प्रभु शेष महेश धरैं जासु फल।
लोक बेद हितु तेहि समय, सब कीन्ह कृपानिधि करि कल्याण।"
संदर्भः रामचरितमानस (बालकाण्ड, दोहा 110)

इस चौपाई में तुलसीदास ने भगवान राम के अवतार के धर्मस्थापन हेतु होने का वर्णन किया है। इससे समाज में धर्म और नैतिकता की स्थापना का संदेश मिलता है।

तुलसीदास की काव्य रचनाओं में मुख्य रूप से धर्म और नैतिकता के प्रति जागरूकता का संदेश है। 'रामचरितमानस' में उन्होंने भगवान राम के आदर्श जीवन का वर्णन किया है, जो एक आदर्श राजा, पुत्र, पति, और भाई के रूप में स्थापित हैं। राम के चरित्र के माध्यम से उन्होंने सत्य, धर्म और मर्यादा की शिक्षा दी। यह समाज को एक आदर्श और नैतिक जीवन जीने की प्रेरणा देता है।

सामाजिक समरसता का संदेश :

"तुम्ह समान रघुबीर सहाई। अतर पुनीत प्रभु निषाद घर आयी।।
दखि राम सुदामा कर पाती। हरष बिकल हृदयँ अकुलाती।।"
संदर्भः रामचरितमानस (अयोध्या काण्ड, दोहा 15)

इस चौपाई में तुलसीदास ने भगवान राम द्वारा निषादराज के प्रति दिखाए गए प्रेम और सम्मान का वर्णन किया है, जो जातिगत भेदभाव को खत्म करने का संदेश देता है।

तुलसीदास ने अपने समय में समाज में व्याप्त जातिवाद और भेदभाव के खिलाफ आवाज उठाई। उन्होंने 'रामचरितमानस' में स्पष्ट किया कि भगवान राम ने शबरी और निषादराज जैसे निम्न जाति के व्यक्तियों से प्रेम और सम्मान किया। यह संदेश समाज में समानता और भाईचारे की भावना को बढ़ावा देने का था। तुलसीदास ने यह दिखाया कि ईश्वर के लिए सभी समान हैं, चाहे वह किसी भी जाति, वर्ग या धर्म के हों।

अंधविश्वासों और धार्मिक कट्टरता का खंडन :

"काहू न कोउ सुख दुःख कर दाता। निज कृत करम भोग सब भ्राता।।"
संदर्भः रामचरितमानस (अयोध्या काण्ड, दोहा 135)

तुलसीदास यहाँ कर्म और उसके फल की बात करते हैं। यह दोहा अंधविश्वासों और भाग्यवाद को खंडित करते हुए कर्म की प्रधानता को दर्शाता है।

तुलसीदास ने समाज में फैले अंधविश्वासों और धार्मिक कट्टरता का खंडन किया। उन्होंने भक्ति को सबसे ऊंचा स्थान दिया और कहा कि केवल भक्ति के माध्यम से ही ईश्वर की प्राप्ति संभव है। उन्होंने कर्मकांड और दिखावे की पूजा के बजाय सत्य, प्रेम, और समर्पण को महत्व दिया। उनकी भक्ति आंदोलन ने समाज को एक नई दिशा दी और धार्मिक चेतना को नया आयाम दिया।

भाषा का विकास और प्रसार :

"संस्कृत भाष्य बिनु कछु नाहीं। बांचत न अधिक जिन ग्यान साधी।
तुलसी की निज भाषा कछु नहीं, हरि यश गावहिं सुनि सुख लाहीं।।"
संदर्भः विनय पत्रिका (दोहा 1)

इस चौपाई में तुलसीदास ने संस्कृत के साथ–साथ आमजन की भाषा को महत्व दिया और इसे साहित्यिक अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया।

तुलसीदास ने अवधी भाषा में 'रामचरितमानस' की रचना की, जो उस समय की आम बोलचाल की भाषा थी। इसने न केवल साहित्यिक वर्गों में बल्कि सामान्य जनजीवन में भी गहरा प्रभाव डाला। उनकी भाषा सरल, सुगम और हृदयग्राही थी, जिससे उनका संदेश समाज के हर वर्ग तक पहुंचा। उन्होंने हिंदी भाषा और साहित्य को एक नई ऊंचाई पर पहुंचाया और इसे जनमानस की भाषा बनाया।

राष्ट्रभक्ति और सामाजिक न्याय का संदेश :

"रामराज्य का एक चरित्र न्यारा। जहाँ न काम क्रोध न विषमता बारा।।
सब नर करहिं परस्पर प्रीती। चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीति।।"
संदर्भः रामचरितमानस (उत्तर काण्ड, दोहा 26)

इस चौपाई में तुलसीदास ने रामराज्य का आदर्श प्रस्तुत किया है, जहाँ न्याय, समानता, और सामाजिक सद्भाव की स्थापना होती है।

तुलसीदास ने अपनी रचनाओं में राष्ट्रभक्ति और सामाजिक न्याय का संदेश भी दिया। 'रामराज्य' का उनका आदर्श समाज में न्याय, शांति और समृद्धि की स्थापना का प्रतीक है। उन्होंने यह दिखाया कि जब शासक धर्म और न्याय के मार्ग पर चलता है, तब समाज में सुख और समृद्धि आती है। यह संदेश आज भी प्रासंगिक है और सामाजिक जागरूकता के लिए प्रेरणा स्रोत है।

गोस्वामी तुलसीदास की कृतियाँ

तुलसीदास ने अपने ११२ वर्ष के दीर्घ जीवन–काल में कालक्रमानुसार निम्नलिखित कालजयी ग्रन्थों की रचनाएँ कीं जो कि निम्नानुसार हैं –गीतावली, कृष्ण–गीतावली, रामचरितमानस, पार्वती–मंगल, विनय–पत्रिका, जानकी–मंगल, रामललानहछू, दोहावली, वैराग्यसंदीपनी, रामाज्ञा–प्रश्न, सतसई, बरवै रामायण, कवितावली, हनुमानबाहुक। परन्तु जनमानस में रामचरितमानस एवं हनुमान चालिसा अधिक लोकप्रिय हैं।

रामचरित मानस का भारतीय जनमानस पर प्रभाव

तुलसीदास की रचनाओं का भारतीय जनमानस पर व्यापक प्रभाव पड़ा। रामचरितमानस का भारतीय जनमानस पर अत्यधिक गहरा और व्यापक प्रभाव पड़ा है। गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित यह महाकाव्य न केवल धार्मिक ग्रंथ के रूप में पूजनीय है, बल्कि यह भारतीय संस्कृति, समाज और जीवन दर्शन का एक महत्वपूर्ण स्तंभ भी है। इसके प्रभाव को कई पहलुओं में देखा जा सकता है।

"रामचरितमानस" ने भगवान राम को आदर्श पुरुष और मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में प्रस्तुत किया। इससे भारतीय जनमानस में राम के प्रति भक्ति और श्रद्धा की भावना गहरी हुई। इस ग्रंथ ने रामकथा को जन–जन तक पहुँचाया और इसे हर घर में पूजा का एक अनिवार्य अंग बना दिया। तुलसीदास के सरल भाषा में लिखे गए दोहे और चौपाइयाँ लोगों के दिलों में बसीं और धार्मिक कर्मकांडों का हिस्सा बन गईं।

"रामचरितमानस" में राम के आदर्श चरित्र, उनके धर्म पालन, न्यायप्रियता, और सत्यनिष्ठा ने समाज में नैतिक मूल्यों की स्थापना की। राम के जीवन से प्रेरित होकर लोगों ने सत्य, धर्म और कर्तव्यपालन को अपने जीवन में उतारने का प्रयास किया। इसने समाज को नैतिकता और सदाचार के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया।

तुलसीदास ने "रामचरितमानस" में सामाजिक समानता और समरसता का संदेश दिया। भगवान राम का शबरी, केवट, निषादराज जैसे निम्न वर्ग के लोगों से प्रेम और सम्मान का व्यवहार जातिगत भेदभाव को समाप्त करने का संदेश देता है। इससे समाज में समता और भाईचारे की भावना को बढ़ावा मिला।

"रामचरितमानस" को अवधी भाषा में लिखा गया, जो उस समय आम जनमानस की भाषा थी। इससे हिंदी भाषा और साहित्य का विकास हुआ। इस ग्रंथ ने लोक भाषा को साहित्यिक और धार्मिक अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया, जिससे यह जन–जन में लोकप्रिय हुआ। इसने हिंदी साहित्य को एक नई दिशा दी और इसे व्यापक जनसमुदाय तक पहुँचाया।

"रामचरितमानस" ने भारतीय लोक संस्कृति में गहरे तक अपनी जड़ें जमा लीं। रामलीला और रामकथा जैसे सांस्कृतिक कार्यक्रम इसी ग्रंथ पर आधारित हैं और ये भारतीय संस्कृति का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गए हैं। रामायण की कहानियों ने भारतीय कला, संगीत, नृत्य और नाटक को समृद्ध किया और इसे राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाई।

समस्या कथन :–

''रामचरितमानस में वर्णित सामाजिक मूल्यों का अभिप्राय''

शोध विधि

शोधार्थी द्वारा दार्शनिक एवं ऐतिहासिक अनुसंधान की पृष्ठभूमि में विचारधाराओं की व्याख्या करके वर्तमान समय की आवष्यकता को ध्यान में रखते हुए **''रामचरितमानस में वर्णित सामाजिक मूल्यों का अभिप्राय''** करना है। प्रस्तुत षोध में दार्शनिक एवं ऐतिहासिक विधि अध्ययन इसी सन्दर्भ में किया गया है। इसके अतिरिक्त कहीं–कही यथास्थान किया गया है।

अतः शोधार्थी के द्वारा षोध में दार्षनिक एवं ऐतिहासिक विधि का उपयोग किया गया है।

निष्कर्ष

"रामचरितमानस" ने भारतीय समाज में राष्ट्रीय चेतना को भी बल दिया। रामराज्य का आदर्श समाज और राज्य की परिकल्पना से लोगों में न्याय, धर्म, और राष्ट्र के प्रति प्रेम की भावना जागृत हुई। इसे एक आदर्श राज्य की अवधारणा के रूप में देखा गया, जहाँ समाज में शांति, समृद्धि, और न्याय की स्थापना होती है।

गोस्वामी तुलसीदास का योगदान सामाजिक जागरण में अद्वितीय और असीमित है। उन्होंने अपने काव्य और साहित्यिक कृतियों के माध्यम से समाज को नई दिशा, नई सोच और नई ऊर्जा दी। तुलसीदास का जीवन और उनकी रचनाएं हमें यह सिखाती हैं कि समाज की उन्नति के लिए नैतिकता, समानता, और न्याय का पालन करना अत्यंत आवश्यक है। उनके विचार और संदेश आज भी हमें सामाजिक बुराइयों से लड़ने और एक आदर्श समाज की स्थापना के लिए प्रेरित करते हैं।

संदर्भ सूची

1. गोस्वामी तुलसी के साहित्य का विशेष मुहायन, भगीरथ मिश्र, पृ. सं.–77
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, पृ. सं. 115, प्रकाशन संस्था नई दिल्ली
3. रामचरित मानस (अरण्यकाण्ड) तुलसीदास, पृ. सं. 416, गीताप्रेस गोरखपुर
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, पृ. सं. 116
5. हिन्दी साहित्यः उद्भव और विकास–हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृ. सं. 132, राजकमल प्रकाशन
6. निबंधें की दुनियाः मुक्तिबोध– सम्पादक– कृष्णदत्त शर्मा
7. विराम चिन्ह, रामविलास शर्मा
8. अस्था के दो चरण– डॉ. नगेन्द्र, पृ. संख्य 391